Anubhav's scan

राज कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 203

बांकेलाल और जादूगर जंगा

Anubhav's Scan

RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING HOME THE JUNOON

Anubhav's scan

बांकेलाल और जादूगर डांगा

चित्रांकन : बेदी

लेखक : पापिन्दर जुनेजा, सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त

एक रात उधमपुर का राजा उधमीसिंह अपने शयन कक्ष में बेचैनी के आलम में टहल रहा था—

ये बांके लाल ही मेरे रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट है। यदि वह न होता तो आज विशालगढ़ मेरे राज्याधीन होता...

...कम्बख्त ने कितनी होशियारी से युद्ध-भूमि में मेरी निश्चित विजय को न केवल पराजय में बदल दिया था, बल्कि मुझे मजबूर कर दिया था कि मैं आजीवन-संधि का प्रस्ताव विक्रमसिंह के पास भेजूं...

...काश! ये बांकेलाल एक बार मेरे हत्थे चढ़ जाए तो मैं इसकी बोटी-बोटी चबा डालूं। मुए ई मुई...

बांकेलाल और राजा उधमीसिंह के विषय में जानने के लिए राज कॉमिक्स का पूर्व प्रकाशित अंक 'कर बुरा, हो भला अवश्य पढ़ें।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

हां! तुम दोनों किसी तरह उसे मेरे पास ले आओ। मैं उस कमीने को बहुत भयंकर सजा दूंगा। मैं उसकी बोटी-बोटी कर दूंगा।

महाराज! यदि आपकी बेचैनी का कारण बांकेलाल ही है तो हम जासूस आपको विश्वास दिलाते हैं कि जल्दी ही बांकेलाल आपके कदमों में होगा।

हूं! लेकिन यह सब इतने गुप्त ढंग से होना चाहिए कि हमारे और तुम्हारे अतिरिक्त किसी को भी इस बात की भनक तक न लगे।

ऐसा ही होगा महाराज!

फिर जासूसों की जोड़ी राजा के शयनकक्ष से बाहर निकल गयी।

फिर दूसरे दिन ही वह जासूस जोड़ी विशालगढ़ के राजमहल के इर्द-गिर्द मंडरा रही थी।

भाई चोपट, अच्छा होता कि हम लोग किसी ठोस योजनानुसार अपना कार्य करते।

मैं भी यही सोच रहा था, भाई चोपट!

दोनों एक पल के लिए सोच मग्न हो गये।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

कागज पर लिखी इबारत को पढ़ते हुए वह बुरी तरह चौंक पड़ा–

बांकेलाल! राजा विक्रमसिंह की जिन्दगी खतरे में है। यदि तुम उनकी मदद करना चाहते हो तो आज रात को नगर के शिव मन्दिर में अकेले ही पहुंचो। राजा और तुम्हारा– शुभचिन्तक

??

तो इसका मतलब राजा विक्रमसिंह की जिन्दगी खतरे में है। वाह! यह तो मेरे लिये शुभ सूचना है।...

...और इस सन्देश में लिखा है कि मैं राजा की मदद के लिए पहुंचूं। भाड़ में जाए राजा। मुझे क्या जरूरत है उसकी मदद करने की। वह कल मरता है तो आज मरे, ताकि विशालगढ़ का राजसिंहासन मेरा हो सके।

तभी एक विचार बिजली की तरह उसके मस्तिष्क में कौंधा–

बेटा बांके! तू राजा की मदद करे या न करे, लेकिन तुझे इस सन्देशवाहक तक पहुंचना ही पड़ेगा, वर्ना हो सकता है कि वह तुझे राजा की मदद के लिये पहुंचता न देख किसी अन्य को मदद का सन्देशा पहुंचा दे, यह तेरे हित में नहीं होगा...

हां, यही ठीक रहेगा। मैं शिवमन्दिर तक जरूर जाऊंगा, और मौका लगेगा तो उस सन्देश वाहक को ही रास्ते से हटा दूंगा ताकि वह आगे किसी को न बता सके कि राजा की जिंदगी क्यों और कैसे खतरे में है।

फिर घोड़े पर सवार हो बांकेलाल नगर के बाहर बने शिव मन्दिर की ओर बढ़ चला–

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

अगले ही पल—

लेकिन तुम्हारे... आह!

भड़ाक

पोपट का एक जोरदार घूंसा बांके की खोपड़ी से टकराया और वह अपनी चेतना खो बैठा।

फिर बांके की चेतना लौटी तब जबकि—

उफ!

धपाक

राजा उधमीसिंह... म... मेरा मतलब महाराज, मेरा कुसूर क्या है जो आप मेरे साथ ये सलूक कर रहे हैं?

आहा-हा-हा-हा।

बांके लाल, हम तुमसे प्रतिशोध लेंगे। हम तुम्हें बड़ी भयानक मौत मारेंगे।...

Books.lakhira.com

Anubhav's scan

...क्योंकि तू ही वह शख्स है जिसके कारण आज मैं चक्रवर्ती राजा उधमीसिंह के बजाए सिर्फ राजा उधमीसिंह के नाम से जाना जाता हूं!...

...सिर्फ तेरे ही कारण विशालगढ़ से तिगुनी सैन्य शक्ति का स्वामी होते हुए भी मैं विशालगढ़ अपने राज्याधीन न कर सका।

क्ष...क्षमा महाराज, अब जबकि आप जान ही चुके हैं कि... विशालगढ़ की सेना आपकी सेना के मुकाबले में आधी से भी कम है तो...

...आप फिर से विशालगढ़ पर आक्रमण क्यों नहीं कर देते?

अब ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि हम राजा विक्रमसिंह से संधि कर चुके हैं। और चूंकि संधि प्रस्ताव हमारी तरफ से भेजा गया था अतः हम चाहकर भी युद्ध की पहल नहीं कर सकते हैं।

तब बांकेलाल के मस्तिष्क में एकाएक एक नई शरारत ने जन्म लिया और—

महाराज, यदि आप मेरे प्राण बख्शें तो मैं आपको ऐसा उपाय बता सकता हूं कि राजा विक्रमसिंह और आपकी सेना में निश्चित युद्ध होगा। और युद्ध की पहल भी स्वयं राजा विक्रमसिंह ही करेंगे।

??

यदि तुम्हारे उपाय से ऐसा संभव हुआ तो हम न केवल तुम्हें अभयदान देंगे बल्कि ढेर सा इनाम देंगे।

इनाम नहीं महाराज, मेरी एक शर्त है।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

क्या?

युद्ध में आपकी विजय होते ही आप विक्रमसिंह को जीवित नहीं छोड़ेंगे और उनका जीता हुआ राज्य मुझे सौंप देंगे। फिर मैं आपके प्रतिनिधि के रूप में विशालगढ़ के राजसिंहासन पर बैठूंगा।

हमें तुम्हारी शर्त मंजूर है। तुम उपाय बताओ।

तो सुनो महाराज, राजा विक्रमसिंह न केवल मेरी इज्जत करते हैं, बल्कि वह मुझे अपने से ज्यादा चाहते हैं। यदि किसी तरह से यह बात उन तक पहुंचा दी जाए कि...

फिर बांकेलाल राजा उधमीसिंह को अपनी योजना बताने लगा। जिसे सुनते हुए उधमीसिंह की आंखें भयानक अन्दाज में चमकने लगीं।

फिर पूरी योजना सुनने के बाद उधमीसिंह पोपट और चौपट से बोला—

तुम लोग विशालगढ़ जाकर बांकेलाल की योजनानुसार अपना कार्य करो।

जी, महाराज।

पोपट और चौपट के जाने के बाद—

बांकेलाल! मुझे खेद है कि जब तक तुम्हारी योजना पूर्ण रूप से सफल नहीं हो जाती, तुम्हें इसी तरह हमारा बंदी बनकर रहना पड़ेगा।

मुझे कोई आपत्ति नहीं महाराज!

विशालगढ़ का राजा बनने के लिए मैं यह कष्ट भी सहने के लिए तैयार हूं। ही-ही-ही।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

इधर पोपट और चौपट विशालगढ़ पहुंचकर बांकेलाल की योजनानुसार जगह-जगह प्रचार करने लगे —

अरे, भाई! तुमने सुना उधमपुर के राजा उधमीसिंह ने अपने बांकेलालजी का अपहरण करवा लिया है।

सुना तो मैंने भी कुछ ऐसा ही है, भइया!

???

बांकेलाल का अपहरण!

क्या? बांकेलालजी का अपहरण! लेकिन उधमपुर के राजा ने ऐसा क्यों किया?

यह तो वही जाने!

???

शीघ्र ही यह खबर राजा विक्रमसिंह तक पहुंची —

महाराज की जय हो। पूरे नगर में चर्चा है कि बांकेलालजी का अपहरण हो गया।

क्या बकते हो?

महाराज, मुझे भी कुछ गड़बड़ नजर आती है, क्योंकि बांकेलाल कल से न तो राजदरबार में आए हैं, और न ही उनको कल से किसी ने देखा है।

लेकिन महामंत्रीजी, भला बांकेलाल का अपहरण कौन और क्यों करेगा?

महाराज, नगर में चर्चा है कि बांकेलालजी के अपहरण में उधमपुर के राजा का हाथ है।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

नहीं ऐसा नहीं हो सकता। उधमीसिंह हमारा मित्र है। वह भला ऐसा क्यों करने लगा?

महामंत्रीजी, सबसे पहले तो आप इस बात की जानकारी लें कि बांकेलाल का अपहरण हुआ है या... कहीं वह स्वयं??

जी, मैं समझ गया, महाराज!

फिर महामंत्री तुरन्त ही दरबार से निकल गया।

और फिर काफी समय बाद जब वह राज-दरबार में वापस लौटा तो —

महामंत्री, आपका परेशान चेहरा बता रहा है कि कहीं कोई गड़बड अवश्य है।

जी, महाराज! बांकेलाल का वाकई कल से कोई पता नहीं। और पूरे नगर में इस बात की चर्चा है कि उनका अपहरण हुआ है और अपहरण में उधमीसिंह का हाथ है।

ओह!

महामंत्री! फौरन ही एक दूत उधमपुर भेज दीजिए, और दूत के हाथ क्या सन्देश भेजना है यह आप खूब अच्छी तरह जानते हैं।

जी, महाराज!

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

उधमपुर के राजा को तो इसी पल की प्रतीक्षा थी। जैसे ही विक्रमसिंह की सेना युद्ध के मैदान में पहुंची उधमीसिंह की सेना ने सुनियोजित ढंग से उसे तीनों ओर से घेर लिया-

उधर युद्ध की खबर चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह तक भी पहुंची—

क्या? दामाद-जी ने उधमपुर पर चढ़ाई कर दी, और हमें इस बात की खबर तक नहीं है।

सेनापति, सेना को कूच का आदेश दो। हमें तुरन्त ही दामाद विक्रम की मदद के लिए पहुंचना है।

जो आज्ञा महाराज!

और इस तरह खबर पाते ही कौशलपुर के राजा कुशलसेन भी राजा विक्रमसिंह की मदद के लिए चल पड़े—

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

इधर युद्ध के मैदान में भीषण युद्ध छिड़ा हुआ था —

मारो!

काट डालो!

हिच!

आह

हाय

लेकिन चूंकि राजा विक्रमसिंह की सेना तीन तरफ से घिरी हुई थी, अतः युद्ध में ज्यादा नुकसान उसी का हो रहा था —

किन्तु फिर भी विक्रमसिंह पूरी हिम्मत और बहादुरी से युद्ध कर रहा था—

आईई

तभी दो अलग दिशाओं से कौशलपुर और चन्दनगढ़ की सेनाएं भी उनकी मदद के लिए पहुंच गयीं—

आक्रमण!

??

आक्रमण!

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

इधर युद्ध के मैदान से भागा राजा उधमीसिंह एक निर्जन जंगल में पहुंचा तो मारे भूख के उसका बुरा हाल था—

उफ! यह मैंने क्या मूर्खता कर दी। वह कौन सी अशुभ घड़ी थी जब मैंने राजा विक्रमसिंह से टकराने की सोची थी। हे भगवान? अब क्या होगा? मैं कहां जाऊं, क्या करूं?

इसी तरह के कई प्रश्न मन में लिए वह जंगल में भटक ही रहा था कि तभी—

अरे! इस बियाबान जंगल में इतना शानदार महल! भला किसका महल हो सकता है यह? चलकर देखें शायद यहां पेट भरने के लिए भोजन-पानी की कुछ व्यवस्था हो जाए।

फिर जैसे ही वह महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो—

???

कौन है तू? और जादूगर डांगा के इलाके में प्रवेश करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?

मेरा नाम उधमीसिंह है, मैं अब से कुछ समय पहले उधमपुर का राजा था, लेकिन...

हूं...। ठीक है अन्दर चलो।

उधमीसिंह ने अपनी सारी राम कहानी कह सुनाई।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

फिर—

उफ! पता नहीं यह सब क्या चक्कर है? मुझे लग रहा है कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही है।

फिर थोड़ी ही देर बाद—

फुर्र ई

अगले ही पल—

लीजिए राजन! आपका अपराधी आपके सामने हाजिर है।

मेरा अपराधी... यह तोता? ल... लेकिन...

र...राजा उधमीसिंह।

राजन, यह कोई साधारण तोता नहीं, बल्कि बांकेलाल है। जिसे मैंने शक्ति से तोता बनाकर यहां बुलाया है...

??

...देखो, मैं अभी इसके असली रूप में इसे लाता हूं।

!!!

फिर जादूगर ने मन ही मन मंत्र पढ़ा तो—

हूं, शैतान की खोपड़ी इसे असली रूप में बदल दो।

अगले ही पल बांकेलाल अपने इंसानी रूप में आ गया—

म...महाराज! यह सब क्या चक्कर है?

बांकेलाल! गुर्र ई।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

दुष्ट! मैं अभी तुझे बताता हूं कि चक्कर क्या है?

कहने के साथ उधमी सिंह ने म्यान से तलवार निकाली...

...और—

ये ले पाजी!

अर्र-र

??

अर्र-र...

म... महाराज, मुझे मारने से पहले कम से कम मेरा कुसूर तो बता दें।

पाजी, मेरा सबकुछ नाशकर अब मुझी से पूछता है कि मेरा कुसूर क्या है।

क्षमा करें महाराज, मैं आपकी किसी भी स्थिति का कतई उत्तरदा नहीं हूं। मैंने तो हमेशा आपका भला चाहा है। लेकिन शायद भाग्य ने मेरा और आपका साथ नहीं दिया है।...

...लेकिन महाराज, मेरे दिमाग में अभी एक ऐसी शानदार योजना है जिससे न केवल आपका खोया राज्य वापस मिलेगा, बल्कि विशालगढ़ का राज सिंहासन भी आपका होगा।

कैसे?

सुनिये महाराज, यदि ये जादूगर अपनी तंत्र विद्या से विक्रमसिंह का रा आपको दे दे तो मैं किसी बहाने...

??

फिर बांकेलाल अपनी योजना उधमी सिंह को बताने लगा...

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

...जिसे सुनकर उधमीसिंह की आंखें भयानक अन्दाज में चमकने लगीं—

क्या ऐसा संभव है, जादूगर डांगा?

अवश्य सम्भव है राजन! लेकिन आपकी मदद सिर्फ इसी शर्त पर कर सकता हूं कि राजा बनते ही आपको भी मेरी मदद करनी होगी।

मैं तुम्हारी हर तरह की मदद करने के लिए वचन देता हूं। बस, तुम बांकेलाल की योजनानुसार मेरी मदद कर दो।

अवश्य राजन!

चलो बेटा बांके! फिलहाल तो जान बची। आगे-आगे देखो होता है क्या?

तब—

ऐ शैतान की खोपड़ी! मुझे इस राजा के दिलो-दिमाग में बसी राजा विक्रमसिंह की तस्वीर दिखा।

जो हुक्म मेरे आका!

!?

अगले ही पल—

आका, यही है विशालगढ़ का राजा विक्रमसिंह।

हूं!

फिर जादूगर ने मन ही मन कोई मंत्र पढ़ा तो—

वाह! चमत्कार हो गया। अब आपकी शक्लो-सूरत हू-बहू राजा विक्रमसिंह से मिलती है।

!?

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

फिर उधमीसिंह ने आइने में अपनी बदली हुई सूरत देखी और सन्तुष्टि पूर्ण ढंग से सिर हिलाता हुआ बोला—

हूं... तो बांकेलाल, अब अपनी योजनानुसार अगला कदम तुम्हें उठाना है।

जी, मैं तैयार हूं।

फिर बांकेलाल उसी रात उधमपुर के राजमहल में पहुंचा और चुपचाप अपने शयनकक्ष में जाकर सो गया—

खर्र-खर्र

और दूसरे दिन सुबह सवेरे ही वह राजा विक्रमसिंह के शयनकक्ष पहुंचा—

आओ, आओ बांकेलाल! सुबह-सवेरे कैसे आना हुआ?

महाराज! मैंने सोचा क्यों न आज सुबह की सैर पर चला जाए।

हां-हां क्यों नहीं, कहते हैं सुबह की सैर से सेहत ठीक रहती है। हम भी तुम्हारे साथ सैर करने चलेंगे।

जी!

वाह! बन गया काम।

फिर दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर सैर के लिए निकल पड़े—

इस मूर्ख को पता नहीं कि यह सुबह की सैर के लिए नहीं, बल्कि मौत के मुंह में जा रहा है।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

काफी देर घूमने के बाद–

बांकेलाल, मेरे ख्याल से काफी सैर हो चुकी है। अब वापस लौटा जाए।

बस महाराज, आगे घना जंगल है, जब इतनी दूर आ ही गये हैं तो क्यों न लगे हाथ शिकार का भी आनन्द लिया जाए?

जैसी तुम्हारी इच्छा बांकेलाल।

पहले सैर, फिर शिकार... लगता है इसके पीछे कोई उद्देश्य है बांकेलाल का। और यह भी तय है कि बांकेलाल जो कुछ भी कर रहा है या करेगा उसमें मेरी ही भलाई होगी।

फिर–

अरे! बांकेलाल देखो, इस बियाबान जंगल में इतना सुन्दर महल!

हां महाराज! आइये, देखें तो भला इस सुन्दर महल का स्वामी कौन है।

अगले ही पल–

आश्चर्य है। यह तो हमारे राजमहल से भी सुन्दर व भव्य है।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

फिर जैसे ही उन दोनों ने महल में प्रवेश किया तो —

आओ-आओ! राजा विक्रमसिंह.

आख़िर तुम फंस ही गये न बांकेलाल के जाल में। हा-हा-हा।

??

बांकेलाल! यह मेरा हमशक्ल कौन है? और यह सब क्या चक्कर है?

यह सारा चक्कर हम तुम्हें समझाते हैं, विक्रमसिंह!

ये तेरा हमशक्ल और कोई नहीं, बल्कि उधमपुर का राजा उधमीसिंह है जिसे मैंने अपने मंत्र बल पर तेरा हमशक्ल बना दिया है...

...और अब हम तुझे मार देंगे, फिर तुम्हारे रूप में तुम्हारी जगह राजा उधमीसिंह विशालगढ़ और उधमपुर के राजा होंगे हा-हा-हा।

और तुम्हारे षड्यंत्र में बांकेलाल भी शामिल है।

महाराज! मौके का फायदा तो हर इन्सान को उठाना ही चाहिए ही-ही-ही।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

पाजी, नमक हराम! तूने मेरे साथ विश्वासघात किया है। मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा!

लेकिन इससे पहले कि वह बांके पर वार करे कि तभी जादूगर के इशारे पर मानव खोपड़ी से रोशनी की एक किरण निकली और—

चलाक!

आह!

तब—

अब तू मरने के लिए तैयार हो जा विक्रमसिंह!

ठहरो महाराज!

??

महाराज, फिलहाल आप विक्रमसिंह का वधन करें, क्योंकि आपने इसकी शक्लो-सूरत तो पा ली है, लेकिन अभी आप इसके सारे कार्य-कलापों व रहस्यों से परिचित नहीं हैं।

जिनको किजानना आपके लिए जरूरी है ताकि किसीनाजुक अवसर पर आपका भेद न खुल सके।

हूं, लेकिन यह हमें अपनेजीवन के सारेरहस्यों से परिचित ही क्यों करवाएगा।

महाराज, क्यों न फिलहाल इसे यहीं जादूगर के महल में कैद रखवा जाए, और आप चलकर उधमपुर और विशालगढ़ का राजकार्य देखें। और यदि किसी अवसर पर कोई ऐसी बात फंसती है...

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

और अभी इन नारों की ध्वनि कुछ कम हुई ही थी कि तभी —

दुष्ट विक्रमसिंह! मैं आ गया हूं तेरी मौत बनकर।

!!!

???

!!!

तुम कौन हो तपस्वी युवक? और क्या चाहते हो?

विक्रमसिंह, मैं तेरी मौत हूं, और तुझे मारने के लिए ही यहां आया हूं।

लेकिन क्यों?

विक्रमसिंह! आज से दस वर्ष पूर्व तूने मेरे बापू को चोरी के झूठे आरोप में बीस कोड़ों की सजा दी थी। मेरा बापू कोड़ों की मार सह न सका और उसने दम तोड़ दिया था...

...और तभी मैंने तुझ से बदला लेने की कसम खाई थी। फिर मैंने दस वर्षों तक महादेवी की तपस्या करके उनसे यह अमोघ-अस्त्र प्राप्त किया...

...इसका वार कभी खाली नहीं जाता। अतः अब तू मरने के लिए तैयार हो जा।

कहने के साथ ही तपस्वी से दिखने वाले युवक ने अमोघ-अस्त्र विक्रमसिंह का वेष धरे उधमीसिंह पर फेंक मारा —

आह!

सचाक

उफ!

!!!

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

फिर अगले ही पल बांकेलाल ने आगे बढ़कर उस तपस्वी से दिखने वाले युवक की गर्दन उड़ा दी—

दुष्ट! ये ले अपने कर्मों का दण्ड भोग।

आ-ई

!!!

स्वर्चीक

महामंत्री! यह सब क्या हो रहा है राजदरबार में?

म...मारे गये। ये कम्बख्त यहां कैसे आ गया?

??

दूसरा राजा विक्रमसिंह

महामंत्री एक पल के लिए तो इन तेजी से घटती घटनाओं को देखकर जड़ सा हो गया था, लेकिन अगले ही पल—

सैनिको, गिरफ्तार कर लो इस बहरूपिये को।

सैनिक आगे बढ़े—

रुको। महामंत्री धरमसिंह, मैं असली राजा विक्रमसिंह हूं, बहरूपिया तो यह है जो मरा पड़ा है। इस बात की पुष्टि तुम इस नमकहराम बांकेलाल से कर सकते हो।

लेकिन तब तक बांकेलाल अपने बचाव की कहानी सोच चुका था, अतः वह मुस्कराता हुआ बोला—

महाराज ठीक कह रहे हैं। यह उधमपुर का राजा उधमीसिंह है। आगे की सारी कहानी मैं आपको बताता हूं...

!!!

आश्चर्यजनक!

??

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

...युद्ध में पराजित होने के बाद उधमीसिंह किसी तरह जादूगर डांगा के पास पहुंचा और फिर उसकी मदद से इसने मुझे तोता बनवाकर मेरा अपहरण करवा दिया...

...लेकिन तोते के रूप में मैं जब जादूगर की तंत्र शक्ति से जादूगर के महल की ओर खिंचा जा रहा था तो रास्ते में...

वत्स, मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हुई। वर मांगो।

महादेवी! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझे ऐसा अस्त्र दें जिसका वार कभी खाली न जाए और मैं अपने दुश्मन राजा विक्रमसिंह का अंत कर सकूं।

...तब...

यह लो वत्स, इस अमोघ-शस्त्र का वार कभी खाली नहीं जाता, लेकिन यह अस्त्र तुम सिर्फ एक ही बार प्रयोग कर सकते हो।

महादेवी मेरा सिर्फ एक ही दुश्मन है, मुझे इसके दुबारा प्रयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी।

उफ्! तो इसका मतलब मेरे अन्नदाता के प्राण खतरे में हैं। कैसे बचाऊं मैं राजा विक्रमसिंह के प्राण?

...फिर जादूगर के महल पहुंचने पर जब मैंने जाना कि जादूगर अपनी मंत्रविद्या द्वारा किसी भी व्यक्ति को किसी भी रूप में बदल सकता है, तब मैंने आपके दुश्मन उधमीसिंह को आपकी जगह तपस्वी युवक के हाथों मरवाने के लिए यह योजना बनाई थी।

त... तो क्या तुमने मेरे प्राण बचाने के लिए यह सब किया?

जी हां, महाराज! आप तो जानते हैं कि मैं सपने में भी आपका बुरा नहीं सोच सकता हूं।

उफ्! बांकेलाल, तुम कितने महान इन्सान हो। और अज्ञान में तुम्हें गलत समझकर कितना भला-बुरा कह बैठा।

Books.Jakhira.com

Anubhav's scan

समाप्त

Books.Jakhira.com